Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 18/March/2025 IJRAW: 2025; 4(4):166-168 Accepted: 21/April/2025

आधुनिक परिप्रेक्ष्य एवं मानस मूल्यः एक समीक्षात्मक विश्लेषण

*[1]अनामिका अवस्थी और [2]डॉ. नन्दलाल मिश्रा

*[1]शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, म.गाँ.चि.ग्रा.वि.वि., चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

[2]अधिष्ठाता, कला संकाय, म.गाँ.चि.ग्रा.वि.वि., चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

यह शोध पत्र गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में वर्णित आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों का वर्तमान संदर्भ में एक समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। श्रीरामचरितमानस एक धार्मिक ग्रंथ होने के साथ–साथ जीवन आधारित मूल्यों का मार्गदर्शक है, जिसमें सत्य, प्रेम, समर्पण, त्याग, धैर्य जैसे मूल्यों का वर्णन मिलता है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य इन मूल्यों को वर्तमान समाज में पुनः स्थापित करना व समाज में आदर्श भावना स्थापित करना है। इस शेध पत्र में विशेष रूप से इस बात का वर्णन किया गया है कि श्रीरामचरितमानस के मूल्य नैतिक व सामाजिक शिक्षा के लिए कितने आवश्यक हैं। यह अध्ययन वर्तमान में व्यक्ति के चरित्र निर्माण व मानसिक स्वास्थ्य के उत्थान के लिये आवश्यक है। श्री मानस के आदर्श पक्षों जैसे प्रभु श्रीराम, माता सीता, भरत जी, हनुमान जी, लक्ष्मण जी के जीवन से प्रेरणा लेकर सामाजिक समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। अतः कह सकते हैं कि श्री रामचरितमानस में वर्णित मूल्य प्राचीन ही नहीं अपितु वर्तमान समाज के लिये भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य शब्दः मूल्य, नैतिक शिक्षा, सामाजिक शिक्षा, चरित्र निर्माण।

प्रस्तावना

श्रीरामचरितमानस को यदि पारिवारिक मूल्यों की पाठशाला कही जाये तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगा, क्योंकि मानस में पारिवारिक मूल्यों, आदर्शों की सर्वोत्कृष्ट छवि देखने को मिलती है चाहे पिता–पुत्र का प्रेम हो, भाई–भाई का प्रेम हो या पति के लिये पत्नी का प्रेम हो या फिर एक माँ का अपने पुत्र के लिये प्रेम हो, प्रेम हो, त्याग हो या समर्पण हो प्रत्येक आदर्शवादी दृश्य श्री मानस में प्राप्त होता है।

श्रीरामचरितमानस के मूल्यों को संजोता वर्तमान समाज के लिये अत्यावश्यक हो गया है। क्योंकि इस प्रतियोगिता से भरे युग को, आर्थिक दौड़ में कहीं मूल्य, आदर्श पीछे न रह जाये इसके लिये आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति मानस पढ़े, समझे व अपने अंदर मूल्यों का विकास करे। जहाँ वर्तमान में लोग लालच के लिये भाई–भाई का अहित कर रहे हैं वहीं मानस में प्रेम के लिये भाई अपने प्राण तक देने के लिये तैयार हैं यह मूल्यों की पराकाष्ठा वर्तमान के लिये जरूरी है जिससे समाज पतित होने से बच सकता है।

शोध का उद्देश्य

शोध का प्रमुख उद्देश्य यह समझना होगा कि मानस के मूल्य वर्तमान संदर्भ में कैसे प्रभावी व प्रासंगिक है। व मानस के मूल्यों में वयक्ति का व्यक्तित्व विकास किस प्रकार से हो सकता है।

श्रीरामचरितमानस में वर्णित मूल्य

चूंकि श्रीरामचरितमानस सम्पूर्ण मूल्यों पर आधारित ग्रंथ है। मानस के प्रत्येक प्रकरण से ही मूल्य आधारित शिक्षा मिलती है ऐसे में कुछ मूल्यों का वर्णन निम्नवत हैं–

- गुरु–शिष्य सम्बंध
- आज्ञापालन व त्याग
- कैकेयी विलाप
- धैर्य और सहिष्णुता

*Corresponding Author: अनामिका अवस्थी

- पारिवारिक व सामाजिक समरसता
- सीता हरण
- सुग्रीव जी ककी मित्रता
- हनुमान जी की भक्ति
- लक्ष्मण शक्ति
- कर्तव्य व आदर्श जीवन

गुरु–शिष्य सम्बंधः श्रीरामचरितमानस में गुरु–शिष्य सम्बंध की सर्वोत्कृष्ट छवि प्रदर्शित होती है। जिसमें प्रभु श्रीराम व उनके गुरू वशिष्ठ की आदर्श छवि प्रमुख है। गुरु के आश्रम में ही रहकर राजपुत्रों ने सामान्य विद्यार्थियों के तरीके ही शिक्षा ग्रहण की, गुरुकुल में अपने कर्तव्य निभाये।

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।।
गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई।।

(बालकाण्ड, दो–203, चौ.2, पृ.सं.169)

गुरु की आज्ञा सर्वोपरि रखी एवं अपने अध्ययनकाल को सम्पूर्ण कर अपने राजमहल गये। मानस अध्ययन से पता चलता है कि बालक को तीव्र बुद्धि, धैर्य, संस्कार, त्याग के गुण गुरुकुल आश्रम से ही मिलते थे। वर्तमान संदर्भ में देखा जाये तो विद्यार्थी एवं गुरू के बीच सम्बंध आत्मीय न होकर भौतिकवादी व आर्थिक हो गया है। गुरु भी अब शिक्षक के रूप में अर्थ के पीछे भागता हुआ दिखता है व विद्यार्थी भी अब बिना मेहनत के फल प्राप्ति की इच्छा रखता है। इसलिये वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मानस मूल्यों जैसे–गुरु–शिष्य सम्बंध, गुरू की आज्ञापालन, सम्मान से सम्मिलित करना आवश्यक है। क्योंकि चाहे दुनिया में जितनी तरक्की हो जाये छात्रों के चरित्र निर्माण व नैतिकता को सुदृढ़ करने के लिये गुरू की आवश्यकता सदैव होगी।

आज्ञापालन व त्यागः मानस में आज्ञापालन व त्याग जैसे आदर्शों की छवि बहुत ही सहज भाव से प्रस्तुत की गयी है। जहाँ वर्तमान में भाई–भाई एक छोटे से जमीन के टुकड़े के लिये एक–दूसरे का खून तक करने में संकोच नहीं करते हैं। वहीं मानस में भाई एक–दूसरे के प्रेम के लिये अपना सर्वस्व त्याग करने में संकोच नहीं करते।

राम मातु गुर पद सिरू नाई। प्रभु पद पीठ रजायसु पाई।।
नंदिगावँ करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा।।

(अयोध्याकाण्ड, दो–323, चौ.1, पृ.सं.502)

श्रीराम का अपने पिता की अज्ञा का पालन करने के लिए वनवास सहर्ष स्वीकारना अपने परिवार के प्रति त्याग, समर्पण को प्रदर्शित करता है वहीं भरत जी द्वारा अपने भाई श्रीराम के प्रति अद्वितीय प्रेम व 14 वर्ष तक अयोध्या के बाहर कुटि में निवास व वनवासी जीवन त्याग का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। वर्तमान समाज को इन मूल्यों को धारण करना आवश्यक है जिससे आपस में प्रेम, सौहार्द व अनुशासना बना रहे।

कैकेयी विलापः माता कैकेयी का विलाप पुत्र के प्रति असाधारण प्रेम व पछतावे का प्रतीक है। उन्हें अपनी गलती का पश्चाताप होता है व ग्लानि से भरी होती है। ऐसे में श्रीराम सर्वप्रथम अपनी माता कैकेयी से मिलते हैं व ग्लानिमुक्त करते हैं। गलती एहसास होने पर पश्चाताप करना महत्वपूर्ण मूल्य है जो समाज को बेहतर बनाता है।

प्रथम राम भेंटी कैकेई। सरल सुभायँ भगति मति भेई।।
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी। काल करम बिधि सिर धरि खोरी।।

(अयोध्याकाण्ड, दो–243, चौ.4, पृ.सं.441)

धैर्य व सहिष्णुताः श्रीराम का विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य व सहिष्णु रहना शिक्षाप्रद है, क्योंकि जिस प्रकार से वर्तमान में लोग धैर्य त्यागते जा रहे हैं व विभिन्न प्रकार के तनावों से जूझ रहे हैं ऐसे में धैर्य व सहिष्णु गुण सकारात्मक लाने के लिए व समस्या समाधान के लिये अत्यंतावश्यक **है।**

पारिवारिक व सामाजिक समरसता

गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुं कुमग पग परहिं न खाले।।

(अयोध्याकाण्ड, दो–314, चौ.3, पृ.सं.497)

श्रीरामचरितमानस पारिवारिक मूल्यों की पाठशाला है। इस ग्रंथ से आदर्श पारिवारिक व सामाजिक जीवन की शिक्षा मिलती है। अपने परिवार के प्रति प्रेम, त्याग, समर्पण, आदर कैसे रखा जाता है, मानस सिखाता है। आदर्शों, वचनों की स्थापना के लिये, कुल की मर्यादा के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की सीख मानस देता है। इस ग्रन्थ से इन मूल्यों को ग्रहण कर परिवार व समाज में एकता, हर्ष, समरसता बनायी रखी जा सकती है।

सीताहरणः मानस का सीताहरण प्रसंग करुणादायक होने के साथ–साथ शिक्षा केन्द्रित भी है। यह प्रसंग नारी के आत्मसम्मान व उसके प्रति सुरक्षा की आवश्यकता के बारे में कहता है। जब रावण ने माता सीता का हरण किया तब से ही उसका अंत सुनिश्चित हो गया। रावण ने माता सीता का हरण तो कर लिया किंतु उन्हें स्पर्श करने की हिम्मत नहीं कर पाया।

हारिपराखल बहु बिधि भय अरू प्रीति देखाइ।
तब असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ।।

(अरण्यकाण्ड, दो–29क)

यह संदर्भ बतलाता है कि एक स्त्री अगर चाहे तो न जाने कितने रावणों का वध कर सकती है एवं स्त्री इतनी शक्तिशाली होती है कि उसके सम्मान पर बुरी नजर डालने वालों का अंत निश्चित होता है। वर्तमान में महिलाओं को प्रयोग की वस्तु समझने वाले लोगों को मानस मूल्य, स्त्री सम्मान के प्रति सीख देना आवश्यक है।

सुग्रीव जी की मित्रता

तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ।
पावक साखी देइ करि जीरी प्रीति दृढ़ाइ।।

(किष्किन्धाकाण्ड, दो–4, पृ.सं.558)

वर्तमान में स्वार्थपरक मित्रता भी हो गयी है किंतु यदि मित्रता की परिभाषा देखनी है तो श्रीराम व सुग्रीव की मित्रता देखनी चाहिए जो संकट के समय सहयोग ओर निष्ठा का प्रतीक है। एक सच्चा व अच्छा मित्र होना आज के समाज की मूलभूत आवश्यकता है।

हनुमान जी की भक्ति

सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना।
तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना।।

(किष्किन्धाकाण्ड, दो–2, चौ.4, पृ.सं.558)

प्रभु श्रीराम के प्रति हनुमान जी की भक्ति व समर्पण एक आदर्श स्थापित करता है जिसमें वर्तमान समाज को वह सीख मिलती है कि यदि आप किसी के प्रति तत्पर हैं तो पूर्ण रूप से समर्पित रहें, छल, प्रपंच का कोई स्थान न हो। किसी लक्ष्य के प्रति पूर्ण निष्ठा से कार्य करें व आत्मानुशासित रहें। भक्ति का भाव जीवन में धेर्य, सकारात्मकता व शक्ति लाता है।

लक्ष्मण शक्ति प्रसंग

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तब सृदुल सुभाऊ।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।

(लंकाकाण्ड, दो–60, चौ.2, पृ.सं.673)

मानस के लक्ष्मण शक्ति प्रसंग में प्रभु श्रीराम प्रभु श्रीराम का अपने भाई लक्ष्मण के प्रति अपार प्रेम, व्याकुलता, दो भाइयों के बीच सौहार्द, भाईचारे, एकता को प्रदर्शित करता है। जो परिवार में मूल्यों की नींव मजबूत करने में सहायक होता है। यह प्रसंग पारिवारिक एकता, सहानुभूति का समर्थन करता है जो वर्तमान दृष्टि से बहुत आवश्यक है।

कर्तव्य व आदर्श जीवन मूल्य

मानस के प्रत्येक पात्र से कुछ न कुछ सीख अवश्य मिलती है, चाहे श्रीराम हों जिन्होंने अपने पिता के वचन के लिए वनवास सहर्ष स्वीकार किया या लक्ष्मण हो जिन्होंने अपने भाई–भाभी की सेवा व साथ के लिए परिवार मोह त्याग दिया या फिर भरत जी जिन्होंने अपनी माता कैकेयी के वरदान को अभिशाप मानकर चौदह वर्ष तक पश्चाताप की अग्नि में जले व आदर्श भाई की छवि प्रस्तुत की। या फिर माता सीता हो जिन्होंने महलों के सुख को तयागर पतिव्रत धर्म का निर्वहन किया। हनुमान जी की भक्ति हो या सुग्रीव जी की मित्रता, शबरी कीर श्रद्धा भक्ति हो या रावण का अहंकार प्रत्येक पात्र सीख देता है। इसलिये कहा जाता है कि मानस मूल्यों की पाठशाला है जो कर्तव्य व आदर्शों से भरी है।

निष्कर्ष

यदि मानस में वणित मूल्यों को वर्तमान समाज में प्रासंगिक किया जाये तो यह प्रतीत होता कि समाज फिर से फलने फूलने लगेगा। नैतिकता व चरित्र निर्माण की परम आवश्यकता समाज में है। जितना ये मूल्य प्राचीनकाल में आवश्यक थे उतने से अधिक इन मूल्यों की आवश्यकता वर्तमान में है। एक धार्मिक ग्रंथ होने के साथ–साथ मार्गदर्शक ग्रंथ है जिसे शिक्षा में शामिल करने से समाज के मूल्यों में सुधार हो सकेगा व सभ्य समाज की छवि तैयार हो सकेगी।

प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई।।
खल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसइ भगति जाके उर माही।।

(उत्तरकाण्ड, दो–119, चौ.3, पृ.सं.835)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस–अयोध्या काण्ड
2. तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस–बालकाण्ड
3. तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस–लंकाकाण्ड दोहा 25, चौपाई 7
4. तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस–सुन्दर काण्ड, 57
5. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन एण्ड एथिक्स, पृ0 471, संस्करण 1921
6. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन एण्ड एथिक्स, पृ0 471, संस्करण 1921